टॉड़गढ़–रावली वन्यजीव अभयारण्यः गत शताब्दी में बाघों की उपस्थिति से सम्बन्धित कुछ ऐतिहासिक तथ्य

सतीश कुमार शर्मा
सहायक वन संरक्षक, वन्यजीव अभयारण्य जयसमन्द
जयसमन्द पोस्ट, जिला– उदयपुर, पिन–313905, राजस्थान, भारत
sksharma56@gmail.com

प्राप्त तिथि–24.03.2015, स्वीकृत तिथि–13.04.2015

सार

टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य कभी बाघों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ पर वर्ष 1955 तक बाघ का शिकार होने के स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध हैं। लेकिन इस अभयारण्य में अब बाघ नहीं दिखते हैं। सम्भवतः यहाँ बाघ 1965 से 1975 के बीच विलुप्त हुए हैं।

बीज शब्द– टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य, गत शताब्दी, ऐतिहासिक तथ्य।

Todgarh-Raoli wildlife sanctuary: Some historical facts about the presence of tigers during last century

Satish Kumar Sharma
Assistant Conservator of Forests, Wildlife Sanctuary Jaisamand,
Jaisamand Post, Udaipur District, Pin-313905, Rajasthan, India
sksharma56@gmail.com

Abstract

Once Todgarh-Raoli sanctuary was famous for the tigers. Authentic evidences are available for tiger hunting in this area till 1955, but now a days tigers are not visible in this sanctuary. Probably tigers has exterminated from this area between 1965 to 1975.

Key words- Todgarh-Raoli wildlife sanctuary, past century, historical facts.

1.प्रस्तावना

राजस्थान सरकार द्वारा दिनांक 28 दिसम्बर, 1983 को अजमेर, पाली एवं राजसमन्द जिलों के मिलन स्थल पर वन्यजीव बहुल 463.03 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य के रूप में स्थापित करने की विधिवत घोषणा की गयी (शर्मा, 2006; घोष, 2007; सकरवाल एवं वर्मा, 2008)। यह अभयारण्य मध्य अरावली क्षेत्र का महत्वपूर्ण अभयारण्य है जिसके दक्षिण दिशा में प्रसिद्ध कुम्भलगढ़ अभयारण्य स्थित है। दोनों अभयारण्यों के बीच में एक दर्रा है जिससे होकर दिवेर–कोट सड़क मार्ग गुजरता है। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड़ का निवास स्थान "टॉड़गढ" यहाँ होने के कारण इस अभयारण्य का नामकरण उनके सम्मान में टॉड़गढ़–रावली रखा गया। रावली एक नजदीकी गाँव का नाम है। इस अभयारण्य में खामली घाट रेलवे स्टेशन से गोरम घाट एवं फुलाद रेलवे स्टेशन तक की वर्षा कालीन रेल सवारी अद्भुत होती है। गोरम घाट रेलवे स्टेशन के आस–पास का क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से धनी ही नहीं अपितु अत्यन्त रमणीक स्थल (जैसे दूधालेश्वर, काबरदाता, जोग मंडी आदि) भी है (शर्मा, 2008, 2011)। वर्षा ऋतु में गोरम घाट रेलवे स्टेशन के चारों ओर ऊँचे हरे–भरे पहाड़ों का दृश्य देखने लायक होता है (फोटो 1 एवं 2)। इन स्थानों पर भालू (अख्तर, 2008), तेंदुआ, जंगली बिल्ली, लकड़बग्घा, कॉमन सिवेट, भारतीय छोटी सिवेट, लंगूर, चौसिंगा, जंगली मुर्गे (शर्मा, 2008) आदि देखने को मिलते हैं।

2.अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन काल

टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य के समस्त क्षेत्र को कुल 3 क्षेत्रों – रावली, जोजावर तथा भीम में बांटा गया है। रावली क्षेत्र में ब्रिटिशकाल का एक वन विश्रामगृह है जिसमें तत्कालीन समय का हाथों द्वारा रस्सा खींच कर चलने वाला पंखा दर्शनीय है।

ब्रिटिशकाल में प्रायः यहाँ अंग्रेज अधिकारी एवं आस–पास के रजवाड़ों–ठिकानों के ठिकानेदार व ओहदेदार शिकार हेतु आया करते थे। आगन्तुकों को यहाँ एक रजिस्टर में 8 कॉलमों में अपना विवरण देना होता था। कॉलमों में आगन्तुक का अपना नाम एवं पता, आगमन की तारीख व समय, प्रस्थान की तिथि व समय तथा 'रिमार्क' अन्तर्गत अन्य विविध जानकारी दर्ज करनी होती थी। टॉड़गढ़–रावली वन विश्राम गृह में लावारिस हालत में तत्कालीन समय संधारित होने वाले इस रजिस्टर के 11 पृष्ठ जीर्ण–शीर्ण हालत में वनकर्मियों को पुराने स्टोर मे मिले। लेखक को जब इस ऐतिहासिक दस्तावेज का वर्ष 2003 में पता चला तो तत्कालीन उप मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक, श्री राहुल भटनागर के ध्यान में लाकर इन पृष्ठों को लेमिनेट कर संरक्षित किया गया।

इन पृष्ठों में 11 दिसम्बर 1932 से लेकर 24 जून 1955 तक कुल 22 साल, 6 माह एवं 15 दिन की अवधि की अनेक महत्वपूर्ण बातें दर्ज हैं। रजिस्टर में दर्ज तिथि से स्पष्ट है इसमें देश की आजादी से लगभग 14–15 वर्ष पूर्व तथा आजादी के लगभग 8 वर्ष बाद तक टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य की वन एवं वन्यप्राणियों संबंधी स्थितियों की महत्वपूर्ण, स्पष्ट एवं पुख्ता जानकारी दर्ज है। यह दस्तावेज अभयारण्य क्षेत्र में गत शताब्दी(20 वीं शताब्दी) में बाघों की उपस्थिति के बारे में कई महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदान करता है।

3.अध्ययन विधि

इस रजिस्टर में तत्कालीन समय आगन्तुकों द्वारा किये गये शिकार का विवरण भी "रिमार्क" कॉलम में दर्ज है जो उस समय टॉडगढ़–रावली के वनों में विद्यमान वन्यप्राणियों की झलक प्रस्तुत करते हैं। पंजिका में दर्ज शिकार किये प्राणियों सम्बन्धी विभिन्न जानकारी यथा शिकार तिथि, प्रजाति, संख्या, शिकार स्थल, शिकार की विधि आदि का विश्लेषण किया गया। तत्कालीन स्थिति को एक आधार रेखा मानकर आज की स्थिति का तुलनात्मक आंकलन इस दस्तावेज से सहज ही किया जा सकता है।

4.परिणाम एवं विवेचना

रावली क्षेत्र में मिले ऐतिहासिक रजिस्टर के पृष्ठों में, आगन्तुकों द्वारा वन क्षेत्रों में उनके द्वारा किये गये शिकार संबंधी दर्ज तथ्यों का अध्ययन किया गया। दिनांक 11.12.1932 से 25.12.1945 तक रजिस्टर में कोई शिकार विवरण दर्ज नहीं है, केवल आगन्तुकों के आगमन, प्रस्थान एवं रुकने की सूचना ही दर्ज है। रजिस्टर में दर्ज शिकार के रिकॉर्ड निम्न हैं :

सारिणी 1: टॉडगढ़–रावली अभयारण्य के कुछ शिकार रिकॉर्ड

क्र. सं.	आगन्तुक का नाम	आगन्तुक की ठहराव अवधि	शिकार किये प्राणी का विवरण		विशेष विवरण
			प्रजाति	संख्या	
1	श्री शंभू सिह एवं पार्टी	3.1.1946 से 8.1.1946	मगर *Crocodilus palustris*	2	बघमाल वन खण्ड में शिकार की कमी होना दर्ज है
2	श्री केशव सेन खारवा	3.7.1947 से 4.7.1947	तेन्दुआ *Panthera pardus*	1	
3	श्री केशव सेन खारवा	26.5.1948* से 2.6.1948	बाघ *Panthera tigris*	1	.470 H.V. से बाघ मारा
4	श्री गणपतसिंह एवं श्री केशव सेन खारवा	17.1.1949** से 3.2.1949	बाघ *Panthera tigris*	1	राजकीय वन में शिकार किया
			जरख *Hyaena hyaena*	1	राजकीय वन में शिकार किया
			तेन्दुआ *Panthera pardus*	1	राजकीय वन क्षेत्र के बाहर शिकार किया
			बतख एवं टील Ducks & Teal	92	आसन तालाब में शिकार किया
			गीज़ Geese	2	आसन तालाब में शिकार किया

			मगर *Crocodilus palustris*	1	आसन तालाब में शिकार किया
5	श्री केशव सेन खारवा	1.3.1951 से 5.3.1951	स्लदग यानी शियागोश *Caracal caracal*	1	सातूखेडा वन खण्ड में शिकार किया
			मुर्गे Fowl	कुछ मारे	संख्या अंकित नहीं है
6	श्री नरेन्द्र सिंह (ब्यावर)	29.10.1952 से 2.10.1952	मुर्गे Fowl	कुछ मारे	संख्या अंकित नहीं है
7	श्री केशव सेन खारवा	4.6.1953 से 5.6.1953	तेन्दुआ *Panthera pardus*	1	
8	श्री केशव सेन खारवा	2.7.1953 से 5.7.1953	बाघ *Panthera tigris*	2	दोनों को एक शॉट में मार गिराया
	श्री गणपत सिंह खारवा एवं श्री केशव सेन खारवा	8.7.1953 से 11.7.1953	तेन्दुआ *Panthera pardus*	1	
9	श्री गणपत सिंह खारवा, श्री केशव सेन खारवा, एवं सुश्री जय कुमारी खारवा	22.12.1953 से 12.1.1954	तेन्दुआ *Panthera pardus*	1	एक बाघ बच गया (Missed a tiger)
			सांभर *Cervus unicolor*	1	श्री सेन द्वारा शिकार किया गया।
			तेन्दुआ *Panthera pardus*	1	जय कुमारी ने दिनांक 7.1.1954 को 9 वर्ष 2 दिन की आयु में अपना पहला शिकार किया
10	श्री केशव सेन खारवा	11.9.1954 प्रातः 10.00 बजे से दिनांक 11.9.1954 अपराह्न 3.00 बजे	बाघ *Panthera tigris*	1	टाड़गढ़ वन खण्ड में . 470 H.V. से एक शॉट में शिकार किया। खूँटी लम्बाई (Peg length) 9'8"
11	श्री केशव सेन खारवा	7.1.1955	बाघ *Panthera tigris*	1	सातूखेडा वन खण्ड में शिकार किया गया।

* अनुसंधान(विज्ञान शोध पत्रिका) के खण्ड 2 (1) पेज 12 पर बाघ मारने की तिथि 24.5.1948 को 26.05.1948 पढ़ा जावे जो सही तिथि है। यही तिथि यहाँ अंकित की गयी है।

** अनुसंधान(विज्ञान शोध पत्रिका) के खण्ड 2 (1) पेज 12 पर बाघ मारने की तिथि 15.1.1949 को 17.1.1949 पढ़ा जावे जो सही तिथि है। यही तिथि यहाँ अंकित की गयी है।

सारणी 1 में दर्ज शिकार रिकार्डों का अवलोकन करने पर निम्न महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर आते हैः–

(अ) दक्षिण अरावली में जहाँ आजादी के बाद तक के कुछ वर्षों में यह प्रजाति विद्यमान थी, आज बाघ देखने को नहीं मिलते। टॉड़गढ़–रावली में 1955 तक बाघ होने का निश्चयात्मक रेकार्ड है। चूँकि पंजिका के 1955 में आगे के पेज उपलब्ध नहीं हैं अतः 1955 के बाद की स्थिति के पुख्ता प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। सम्मवतः बाघ आगे भी कुछ वर्षों तक विद्यमान रहे होंगे।

(ब) सभी मौसम शिकार की दृष्टि से समान नहीं हैं। राजस्थान में गर्मी की ऋतु में धूप, सूखा, पानी की कमी आदि के कारण मौसम अच्छा नही माना जाता। वर्षा में तत्कालीन समय नदी–नालों में पानी आने से आवागमन बाधित होता था क्योंकि उस समय कच्चे मार्ग ही उपलब्ध थे तथा पुल व पुलियों की उपस्थिति बहुत कम थी। वर्षा में मक्खी, मच्छर व अन्य कीट–पतंगे भी बहुत हो जाते थे। सर्दी में धूप कम रहती है। प्यास भी ज्यादा नहीं लगती तथा दिनभर मचान पर आसानी से बैठा जा सकता है। अतः सर्दी को शिकार हेतु अच्छा मौसम माना जाता था। मौसम के हिसाब से शिकार की स्थिति निम्न रही :

सारणी 2: विभिन्न मौसमों में शिकार की स्थिति

गर्मी (मार्च से जून) में किये शिकार	वर्षा (जुलाई से अक्टूबर) में किये शिकार	सर्दी (नवम्बर से फरवरी) में किये शिकार
बाघ–1 शियागोश–1 तेंदुआ–1	तेंदुआ–2 बाघ– 3	मगर– 3 बाघ– 2 सांभर– 1 जरख– 1 तेंदुआ– 3 गीज– 2 बतख एवं टील – 92 मुर्गे– (संख्या अंकित नहीं)

सारणी 2 से स्पष्ट है कि वैसे तो सालभर शिकार होता था लेकिन सर्दी में खास शिकार सीजन होता था। सर्दी में मौसम अच्छा रहने से दिन भर वन भ्रमण सहज रहता था। आधुनिक हथियार के रूप में बंदूके आ जाने से .470 का उपयोग शिकार हेतु किया गया। सर्दी में मगर पानी के बाहर धूप सेवन करते हैं अतः आसानी से दिखते हैं। जलीय आवासों में भी देशान्तर गमन कर आने वाले पक्षियों के कारण पक्षी शिकार सहज होता है। बाघ एवं तेंदुओं व अन्य प्राणियों के सर्दी में गहरे रंग की "सर्दी की फर" आ जाती है अतः गहरे रंगों की चमडी से सुन्दर ट्रॉफी बनवाई जा सकती थी। अंग्रेजों के आगमन से पहले ट्रॉफी बनाकर निवास में रखने की कोई प्रथा नहीं थी क्योंकि ट्रॉफी मुर्दा स्वरूप है एवं मुर्दे को घर में रखना भारतीय संस्कृति में अच्छा नहीं माना जाता था। लेकिन अंग्रेजों के आगमन के बाद उनकी देखा–देखी स्थानीय रजवाड़ों में भी ट्राफी रखने का चलन प्रारम्भ हुआ तथा सुन्दर ट्रॉफी प्राप्त करने के लिए सर्दी में शिकार का चलन बढ़ा (श्री रजा एच. तहसीन, पूर्व मानद वन्यजीव प्रतिपालक, निजी वार्तालाप, 2012)।

(स) पक्षियों में जलीय पक्षी एवं मुर्गे, शाकाहारी स्तनधारियों में सांभर(*Cervus unicolor*) एवं मांसाहारियों में बाघ(*Panthera tigris*), तेन्दुआ(*Panthera pardus*) शियागोश(*Caracal caracal*) एवं जरख(*Hyeana hyeana*) का शिकार किया गया। जंगली मुर्गे की दो प्रजातियाँ उजाडी कूकडा(Grey Jungle fowl *Gallus sonneratii*) तथा झापटा (Red Spurfowl *Galloperdix spadicea*) दक्षिण राजस्थान में पाई जाती हैं। दोनों प्रजातियाँ उत्तरी गुजरात के साबरकांठा व बनासकांठा जिलों के वनों से लेकर दक्षिण राजस्थान में टॉड़गढ़–रावली तक पायी जाती हैं। टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य के भीलबेरी क्षेत्र में इन मुर्गों को सहजता से बोलते सुना जा सकता है एवं विचरण करते भी देखा जा सकता है।

(द) वर्तमान वन्यप्राणी गणनाओं का अध्ययन करने पर पता चलता है कि अब क्षेत्र में बाघ समाप्त हो चुका है। शियागोश भी काफी कम दिखाई देते हैं। मगर की संख्या में भी कमी आई है।

5.निष्कर्ष

इस पुराने दस्तावेज के अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि गत 50 वर्षो में बाघ जैसी प्रजातियाँ टॉडगढ़ रावली अभयारण्य में समाप्त हुई हैं। टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य में 1955 तक बाघ उपस्थित होने के पुख्ता प्रमाण उपलब्ध हैं। इस अभयारण्य में बाघ 1965 से 1975 के बीच समाप्त हुआ है (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2012)। शियागोश एवं मगर की संख्या सिर्फ टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य में ही कम नहीं हुई है बल्कि कमोबेश यह स्थिति अन्य अभयारण्यों में भी है। चूंकि टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य की निरन्तरता कुम्भलगढ़ अभयारण्य से है एवं कुम्भलगढ़ अभयारण्य की निरन्तरता खोखरिया की नाल होकर गोगुन्दा एवं ओगणा रेंजों के वनों से होती हुई फुलवारी की नाल अभयारण्य तक है (शर्मा 2014)। फुलवारी की नाल अभयारण्य की निरन्तरता उत्तरी गुजरात में पोलोवन, आंतर सुम्बा आश्रम क्षेत्र के वन एवं ज्ञानगढ़ क्षेत्र के वनों तक है। इन वनों की गुजरात के बालाराम–अंबाजी एवं जस्सोर अभयारण्यों में भी निरन्तरता है। इस प्रकार गुजरात से लेकर मध्य राजस्थान तक अरावली क्षेत्र के वनों में निरन्तरता है जिनमें कभी बाघों का आवास था एवं आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे क्षेत्रों में स्थानांतरण होता था (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2012)। भविष्य में कुम्भलगढ़–टॉडगढ़–रावली अभयारण्य संकुल में पुनः बाघ को आबाद किया जा सकता है क्योंकि गुणात्मक रूप से अच्छा आवास यहाँ अभी भी उपलब्ध है। लेकिन इस आवास में एक कमी है, यहाँ खाद्य श्रृंखलाएं टूटी हुई स्थिति में हैं। यानि प्रे–बेस बढ़ा कर ही बाघ को पुनः आबाद करने की तरफ सोचा जा सकता है।

संदर्भ

1. अख्तर, एन0(2008) स्लॉथ बीयर इन राजस्थान, सम्पादकः अशोक वर्मा;"कंजर्विंग बायोडायवर्सिटी ऑफ राजस्थान में", मु0पृ0 262–266।
2. घोष, ए0(2007) "विरासत"। वन विभाग, राजस्थान।
3. सकरवाल, एस0 के0 एवं वर्मा, अ0(2008) प्रोटेक्टेड एरिया ऑफ राजस्थान, सम्पादकः अशोक वर्मा; "कंजर्विंग बायोडायवर्सिटी ऑफ राजस्थान" में, मु0पृ0 16–30।
4. शर्मा, एस0 के0(2006) वन्यजीव प्रबंध, हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, नई दिल्ली।
5. शर्मा, एस0 के0(2008) पेनिन्सुलर एण्ड वेस्टर्न घाट्स फ्लोरल एण्ड फौनल एलीमेन्ट्स इन राजस्थान, सम्पादकः अशोक वर्मा; "कंजर्विंग बायोडायवर्सिटी ऑफ राजस्थान" में, मु0पृ0 10–15।
6. शर्मा, एस0 के0(2011) ऑर्किड्स ऑफ डेजर्ट एण्ड सेमी–ऐरिड बायोज्योग्राफिकल जोन्स ऑफ इंडिया। हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, नई दिल्ली।
7. शर्मा, एस0 के0(2014) दक्षिणी राजस्थान के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बाघ से सम्बंधित कुछ तथ्य, अनुसंधान(विज्ञान शोध पत्रिका), खण्ड–2, अंक–1, मु0पृ0 9–17।

फोटो.1 : टॉड़गढ़–रावली अभयारण्य में स्थित गोरमघाट रेल्वे स्टेशन का एक दृश्य

फोटो.2 : अभयारण्य के जैव विविधता बहुल एवं रमणीक स्थल दूधालेश्वर के वन क्षेत्र की एक झलक